कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

यतेमहि स्वराज्ये

Pramāna

Research Journal

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
website : www.pramanaresearchjournal.com
Impact Factor : 4.005

यतेमहि स्वराज्ये
ISSN : 2249-2976

Pramāna

Research Journal

(Art, Literature, Humanity, Social Science, Commerce, Management, Law & Science Subjects)

(Indexed & Listed at :
Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest. U.S.A.)
Copernicus, Poland
Research Bib., Japan
(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))
UGC Approved List Sl. No. 41241

Year : 8
Issue : 31(ii)
January-March 2019
www.parmanaresearchjournal.com

माया जीवेत् सुखं जीवेत्

Acharya Academy, Bharat

ISO : 9001-2008

योगमते चित्तवृत्त्यवस्थानां विश्लेषणात्मकमध्ययनम्
सुनीत कुमार 122-126

स्वदेश दीपक के 'कोर्ट मार्शल' में दलित-चेतना
डा० निर्मल सिंह 127-130

ਪੱਛਮੀ ਪੰਜਾਬੀ ਗ਼ਜ਼ਲ : ਸਮਾਜਵਾਦੀ ਪਰਿਪੇਖ
[illegible] 131-134

प्राचीन भारत में वर्ण व्यवस्था का औचित्य: एक अध्ययन
डा. सज्जन सिंह 135-137

प्रेमचन्द के साहित्य में दलित चेतना : एक समीक्षा
भुवनेश कुमार परिहार 138-142

The Concept of Self with Special Reference to Buddha Philosophy
Dr. Monoranjan Das 143-146

महिला शिक्षकों के सशक्तिकरण का उनके कार्य संतुष्टि पर प्रभाव का अध्ययन
डॉ. शोभा पुरकर, श्रद्धा तिवारी 147-149

Nature of Knowledge on Account of K. C. Bhattacharyya
Md. Shafiqul Islam 150-155

India –US Strategic Relations: An Assessment
Doli Sharma 156-165

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय महिला पत्रिकाएँ
डॉ० ओमप्रकाश सैनी 166-169

सन् 1947 ई. के पश्चात की दलित कहानियों में सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक सरोकार
[redacted] ~~170-177~~

चार्ल्स ग्रांट : भारतीय इतिहास लेखन में योगदान
[illegible] कुमार 178-183

Role of Judiciary in Contractual Employment
Dharam Pal Singh Punia 184-188

Globalisation, international migration and India
Pooja Monga, Dr. Madhu Ahlawat 189-193

Compensatory Jurisprudence: Compensation to Victims from State
Jyoti 194-198

Major Environmental Issues in India impact and Prospect
Dr. Madhu Ahlawat 199-203

मानवीय मूल्यों का स्पष्टीकरण
राजश्री 204-209

भारतीय शास्त्रीय संगीत में घरानों का इतिहास, परिभाषा एवं महत्त्व
जगदीश कुमार 210-213

Communal Violence
Mukul Gupta 214-220

Human Resource Development Audit
Diksha Sharma 221-226

Problem Faced by Women Police: A Case Study of Haryana
Jyoti 227-231

Pramāna
International Refereed

UGC Approved No. 41241
Impact Factor : 4.005
Research Journal (ISSN : 2249-2976)
Year-8, Issue-31(II) (Jan.-March 2019) Page No. 166-169

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय महिला पत्रिकाएँ

डॉ० ओमप्रकाश रोनी
एसोसिएट प्रोफेसर, स्नातकोत्तर हिन्दी-विभाग
आर.के.एस.डी. कॉलेज, कैथल (हरियाणा)

शोध-आलेख सार

आजादी से पूर्व भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 1 जून, 1874 को स्त्रियों के लिए 'बालबोधिनी' (वाराणसी) पत्रिका का प्रकाशन किया। प्रतापनारायण मिश्र ने 15 मार्च 1883 को 'ब्राह्मण' का प्रथम अंक निकाला। वर्ष 1923 में 'मनोरमा' (इलाहाबाद) नामक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ, जिसे हिन्दी की एकमात्र महिला पत्रिका होने का गौरव प्राप्त है। 'मनोरमा' महिला जगत में अत्यन्त लोकप्रियता हासिल करने वाली पत्रिका थी। 'भारती' नामक पत्रिका का संपादन करने वाली स्वर्ण कुमारी देवी को भारत की पहली महिला संपादिका होने का गौरव प्राप्त है।

मुख्य-शब्द : सक्रिय पत्रकारिता, स्वतंत्रता आंदोलन, संपादक मण्डल ।

आजादी से पूर्व भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 1 जून, 1874 को स्त्रियों के लिए 'बालबोधिनी' (वाराणसी) पत्रिका का प्रकाशन किया। प्रतापनारायण मिश्र ने 15 मार्च 1883 को 'ब्राह्मण' का प्रथम अंक निकाला। वर्ष 1923 में 'मनोरमा' (इलाहाबाद) नामक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ, जिसे हिन्दी की एकमात्र महिला पत्रिका होने का गौरव प्राप्त है। 'मनोरमा' महिला जगत में अत्यन्त लोकप्रियता हासिल करने वाली पत्रिका थी। 'भारती' नामक पत्रिका का संपादन करने वाली स्वर्ण कुमारी देवी को भारत की पहली महिला संपादिका होने का गौरव प्राप्त है। यह गुरुवर रवीन्द्र नाथ टैगोर की बड़ी बहन तथा प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी भी थी। काव्य सर्जन के संस्कार उन्हें परिवार से ही मिले थे, उसी का परिणाम था कि वे एक महान् कवयित्री, उपन्यासकार एवं समाज सेविका थी। अखिल भारतीय महिला सम्मेलन तथा 'इंडियन वुमेंस एसोसिएशन' की संस्थापिका एवं अध्यक्ष मार्गरेट कजिंस ने 'स्त्रीधर्म' तथा 'रोशनी' नामक पत्रिकाओं का संपादन किया। 'रोशनी' के माध्यम से उन्होंने भारतीय स्त्री में नेतृत्व क्षमता को जगाने के लिए आजीवन संघर्ष किया। असहयोग आंदोलन के दौरान श्याम कुमारी नेहरू अंग्रेज सरकार द्वारा जब्त किए गए पत्र 'स्वराज' की हस्तलिखित प्रतियां तैयार कर गुप्त रूप से उनका वितरण करती रही। 1922 से पूर्व देशबंधु चितरंजन दास की पत्नी बसंती देवी 'बंगाले कथा' का संपादन करती रही। ऊर्मिला देवी शास्त्री ने लाहौर से 'जन्मभूमि' नामक दैनिक पत्र निकालना आरंभ किया। अपनी बेबाक संपादकीय टिप्पणियों के कारण उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा। 1930 में 'हंस' के संपादकों में कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्द की पत्नी शिवरानी देवी का नाम आता है। सक्रिय पत्रकारिता के लिए सरला देवी चौधरी का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। 'भारती' पत्रिका में उनके विचार प्रधान लेख छपते थे। गांधी जी के विचारों को बंगला भाषा में अनूदित कर वे 'भारती' के माध्यम से जनता तक पहुंचा रही थी। यह कर्मठ महिला 1920 के कांग्रेस अधिवेशन (बनारस) में 'वंदेमातरम्' गाने वाली पहली महिला थी। गोपाल कृष्ण गोखले के आग्रह पर इस गीत की प्रथम दो पंक्तियों की धुन गुरुवर रवीन्द्र नाथ टैगोर ने बनाई थी बाकी की सरला देवी ने तैयार की थी। 'भारती' के संपादन के अतिरिक्त सरला देवी ने 'बंगेर वीर' नामक पुस्तक का प्रणयन भी किया।

मधुशाला, पंत, महादेवी वर्मा, माखन लाल चतुर्वेदी, नरेन्द्र शर्मा, बच्चन, मैथिलीशरण गुप्त, सुभद्रा कुमारी चौहान, दिनकर सरीखे अनेक साहित्यकारों की रचनाओं ने सरस्वती को समृद्ध किया।

द्विवेदी युग की प्रमुख पत्रिकाओं में नृसिंह (1907), मर्यादा (1909), प्रताप (1913), विश्वमित्र (1916), आज (1920), कर्मवीर (माखनलाल चतुर्वेदी), आदि के नाम गिनवाये जा सकते है। इन पत्रिकाओं ने न केवल हिन्दी भाषा का प्रचार किया, अपितु देश के युवकों को स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए भी प्रेरित किया।

संदर्भ

1. डॉ० सूर्य प्रसाद दीक्षित, 'हिन्दी पत्रकारिता कोश', पृ० 386